डाईलॉग (Dialogue) की आवश्यकता एवं लाभ

मित्रों, बन्धुओं और महानुभावों,

मैं आप सबकी यहाँ उपस्थिति का तथा आने के कष्ट के लिये अपनी तथा अपने सब बुलाने वाले साथियों की ओर से हृदय से स्वागत करता हूँ। हमारे युग और हमारे देश में राजनीतिक सम्मेलनों, पार्टियों के जलसों, बौद्धिक परिचर्चाओं और साहित्यिक बैठकों की कमी नहीं है। शायद ही कोई दिन ख़ाली जाता हो कि कोई ऐसी बैठक न होती हो। पत्रकार सम्मेलनों को भी कमी नहीं। मगर वे मुख्य उद्देशों से की जाती हैं, किन्तु उनमें विचारों के स्वतन्त्र आदान प्रदान की नौबत कम ही आती है। आवश्यकता है कि परम्पराओं और संकोच से मुक्त होकर जिस तरह एक परिवार या एक महल्ले के लोग किसी जगह इकठठे होकर निःसंकोच बातचीत करते हैं मित्रों और सम्बन्धियों में शिकवा-शिकायत होती है, ग़लतफ़हमियाँ दूर की जाती हैं, अपने परिवार या मोहल्ले की उन्नति के लिये परामर्श करते हैं, बिछुड़े एक दूसरे से गले मिलते हैं, उसी तरह हम कभी-कभी किसी केन्द्रीय स्थान पर जमा होकर मित्रता पूर्ण एवं निःसंकोच विचार विमर्श तथा विचारों का आदान प्रदान करें। इसी विचार तथा अनुभव के अधीन अधिक लाभदायक समझा गया है, और इसके अच्छे परिणाम निकले हैं। इसी विचार से आप महानुभावों को आज कष्ट दिया गया है।

चिन्ता और परेशानी की बात एवं गम्भीर स्थिति

सज्जनो! मनुष्य के लिये बीमारी कोई अस्वाभाविक चीज नहीं। किसी का बीमार पड़ जाना मानव स्वभाव के विपरीत नहीं है बल्कि यह एक तरह से जिन्दगी की अलामत है। पत्थर

www.abulhasanalinadwi.org

ग़लती नहीं कर सकता, पेड़ ग़लती नहीं कर सकता। इन्सान ही ग़लती करता है। इसलिये ग़लती करना अधिक परेशानी की बात नहीं और इस पर निराश नहीं होना चाहिये। एक बड़े मानव समुदाय का किसी ग़लत रास्ते पर पड़ जाना अपनी तुच्छ इच्छाओं की पूर्ति के पीछे दिवाना हो जाना मानव इतिहास के लिये भी और स्वयं मानव के लिये भी कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं है। चिन्ता की बात यह है कि बिगाड़ से निबटने, और बिगाड़ पैदा करने वाली शक्तियों से आँखे मिलाने वाले, अपनी सुख-सुविधा को तज कर और अपनी इज़्ज़त को ख़तरे में डालकर मैदान में उतरने वाले न मिलें, असल चिन्ता की बात यह है। इन्सान अनेक बार ऐसी बिगाड़ पैदा करने वाली ताक़तों और सज़िशों के शिकार हुए हैं और ऐसा प्रतीत होने लगा है कि इन्सानियत जल्द दम तोड़ देगी। लेकिन इतिहास साक्षी है कि ऐसे हर नाज़ुक अवसर पर ऐसे लोग मैदान में आ गये जिन्होंने डटकर हालात का मुक़ाबला किया और अपने जान की बाजी लगा दी। मानव सभ्यता का क्रम जो अभी तक जारी है, मात्र पीढ़ियों का क्रम नहीं बल्कि मानवीय गुणों के क्रम का नतीजा है जो हर युग में रहा है। मानवीय भावनायें, उच्च विचार, नैतिक शिक्षा तथा इनके फलने फूलने के लिये साहस और बलिदान की भावना जो इस समय तक चली आ रही है वास्तव में उन लोगों की मेहनत का नतीजा है जो बिगड़े हुये हालात से मैदान में आये और उन्होंने उस समय की चुनौती को कबूल किया और ज़माने की कलाई मोड़ दी ऐसे लोगों की बदौलत मानवता जीवित है। हर युग के कवि, हर ज़माने के साहित्यकार और प्रत्येक काल के लोग समय के बिगाड़ की शिकायत करते चले आये हैं। लेकिन हम देखते हैं कि इसके बाद भी मानवीय गुण, मानवीय भावनायें और नेक इन्सान मौजूद रहे। यह वास्तव में उन लोगों के संघर्ष का प्रतिफल है जो उस समय अपने स्वार्थ को भूलकर मैदान में आये और अपने-अपने ख़ानदान के लिए और अपनी आगे आने वाली पीढ़ी के लिए खतरा मोल लिया और ज़माने का रुख़ मोड़ दिया। ऐसे लोगों के प्रयास और बलिदान के पानी से मानवता की खेती हरी हो गई।

www.abulhasanalinadwi.org

मानवता की सुरक्षा की वास्तविक ज़मानत

मानवता को जीवित रखने के लिये बीर बाँकुरे, जाँबाज़ और सहृदय लोगों की जरूरत है जो चोट खाया दिल, आँसू भरी आँखे रखते हैं। और जो विषम परिस्तिथियों का डटकर सामना करें और समय की धारा को वदलने के लिए जान की वाजी लगा दें। जव कभी इस तत्व का अभाव होता है तो पूरा समाज खतरे में पड़ जाता है। भले ही वह देखने में स्वस्थ दिखाई पड़े जैसे एक मोटा ताजा आदमी जिसके अन्दर वीसियों प्रकार की बीमारियाँ हों लेकिन उसका मोटापा सव पर पर्दा डाले रहता है और देखने वालों को धोखा होता है और लोग समझते हैं कि यह व्यक्ति वहुत तनदुरुस्त है लेकिन वास्तव में वह वीमारियों का ढेर है।

समाज का सबसे बड़ा खतरा अत्याचार की प्रवृत्ति, उससे बढ़कर उसे नापसन्द करने वालों एवं उसे रोकने वालों में बलिदान का आभाव

किसी समाज के लिए सवसे वड़ा खतरा यह है कि उसके अन्दर ज़ुल्म का मिज़ाज पैदा हो जाये और इससे अधिक खतरनाक वात यह है कि इस अत्याचार की प्रवृति को नापसन्द करने वाले उस समाज में वहुत ही कम या नहीं के बरावर हों। और ढूंढ़ने से भी न मिलें। पूरे समाज में गिने चुने लोग भी ऐसे तो हों जो इस अत्याचार और अनाचार को नापसन्द करते हों। और अपनी ना पसन्दीदगी का एलान करते हों। घर बैठकर नापसन्द करने वाले तो मिल जायेंगे जो चार छः लोगों की मौजूदगी में कह दें कि यह ठीक नहीं हो रहा है। किन्तु अपनी नापसन्दीदगी का एलान करते हुए मैदान में उतरने वाले कुछ भी न हों। ऐसे लोगों की जव किसी समाज में कमी होती है तो उस समाज को कोई ताकत नहीं वचा सकती है। जव किसी समाज में ज़ुल्म फैलने लगा हो और पसन्दीदा निगाहों से देखा जाने लगा हो जब अत्याचार का मापदण्ड यह बन गया हो कि ज़ालिम कौन है? उसकी क़ौमियत क्या है? वह किस वर्ग का है? उसकी भाषा क्या है? किस विरादरी का है? तो मानवता के लिए एक वड़ा खतरा

www.abulhasanalinadwi.org

पैदा हो जाता है। जब मानवता को इस तरह के ख़ानों में बाँटा जाने लगे और जालिम की भी कौमियत देखी जाने लगे, जब उसका मज़हब पूछा जाने लगे। जब आदमी अख़बार में किसी फ़साद या किसी जुल्म या ज्यादती की खबर देखे तो उसकी निगाहें यह तलाश करें कि किस सम्प्रदाय की तरफ से यह बात शुरु हुई इसमें नुकसान किसको पहुँचा जब जुल्म को नापने और जालिम होने का फैसला करने का यह माप-दण्ड बन जाता है कि वह किस कौम, सम्प्रदाय और बिरादरी का है तो उस वक्त समाज को कोई ताकत की जेहानत, कोई सरमाया और बड़े-बड़े मन्सूबे (योजनायें) बचा नहीं सकते।

धर्म और दुनिया के इतिहास का सामूहिक निर्णय

मानवीय इतिहास दर्शन तथा इतिहास शिष्टाचार का छात्र होने के नाते अब मैं यह आग्रह करना चाहता हूँ (और मुझे भय है कि सम्भवतः दूसरा व्यक्ति जिस पर राजनीतिक विचार-धारा का प्रभाव है, न कहेगा) कि देश के लिये एक बड़ा खतरा चिन्ता का विषय है जिस पर आप का पहला ध्यानाकर्षण होना चाहिए। एक है अन्याय व अत्याचार का झुकाव, जन-जीवन तथा फल व सम्मान का मूल्य न होना (इसका सम्बन्ध किसी भी सम्प्रदाय से क्यों न हो)। इसका उदय साम्प्रदायिक दगों वर्ग के ऊँच-नीच होने के आधार पर पूरे-पूरे परिवारों व महल्लों का सफाया, थोडे से धन-लाभ के लिए इन्सान की जान ले लेना, नृशंस अपराध तथा अन्याय की अधिकता और अंत में (किन्तु सबसे अधिक लज्जाजनक वास्तविकता), वांछित तथा आशान्वित दहेज न लाने पर नव विवाहिता वधू को जलाने या जहर दे कर मारने और उनसे पीछा छुड़ाना है। जो लोग धर्म में आस्था रखते हैं, उनके लिये तो यह समझना बहुत सरल है कि इस ब्रह्मांड का निर्माण करने तथा गति देने वाला जो मां से अधिक प्रेम करने वाला और दयालु है, इस कार्य से प्रसन्न नहीं हो सकता और उसे अधिक समय तक बर्दाश्त नहीं करेगा, केजिस फलस्वरूप हजारों प्रयत्न और योग्यताओं के बावजूद कोई देश पनप नहीं सकता तथा वह समाज अधिक समय तक शेष नहीं रह सकता, ईश्वरके अस्तित्व के बाद सभी धर्मों, वर्गों और

www.abulhasanalinadwi.org

विचारधाराओं का जिस तथ्य पर मतैक्य है वह यह कि जुल्म (वह चाहे जिससे हो) एक महापाप है तथा देश और जाति के लिए वह सदैव घातक सिद्ध हुआ है और यह कि इसका प्रतिफल जल्दी या देर से भोगना अवश्य पड़ता है। किसी देश के लिए उसके आन्तरिक अत्याचार बाहर वाले के अत्याचार की अपेक्षा अधिक खतरनाक और घातक होते हैं। आन्तरिक अत्याचार से देश ईश्वरीय मदद से वंचित हो जाता है और स्वयं मजलूमों (उत्पीड़ित) की आहों और दुखे दिलों की कराहों का निशाना बनता है जिसके प्रभाव को सभी धर्म एवं शास्त्र स्वीकार करते हैं। जबकि बाहर वाले के अत्याचार के समय ईश्वरीय मदद, अच्छे इन्सानों की सद्भावायें, और मजलूमों की आहें देश के साथ होती हैं। किन्तु जो लोग धर्म में विश्वास नहीं रखते वे इस ऐतिहासिक यथार्थ से अवगत हैं कि इससे कम मात्रा के अत्याचार तथा नृशंसता के कारण बड़े-बड़े राजतंत्र और सभ्यतायें, जिनका किसी समय में डंका बजता था और आज भी इतिहास एवं साहित्य के पृष्ठों पर उनके दीप्त-चिन्ह हैं पतन का शिकार होकर पुरानी दास्तान बन कर रह गयीं। इस वस्तुस्थिति को तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है राजनीतिक-समस्याओं तथा चुनाव अभियान से अधिक इसके विरुद्ध तूफानी अभियान चलाने की आवश्यकता है, कड़े से कड़े कानून, उदाहरण प्रस्तुत करने वाले दण्ड, जन संचार माध्यमों से काम लेने तथा प्रशासन को कड़े से कड़े कदम उठाने की आवश्यकता है; अन्यथा न बांस रहेगा न बाँसुरी।

अत्याचार का परिणाम, हिंसक घटनाऐं

साम्प्रदायिकता, नृशंसता व हिंसा की खुली प्रवृत्तियाँ देश को भूगर्भीय विस्फोटक सुरंगों की दया पर छोड़ देना है जो अन्त में देश को ले डूबेगा। गांधीजी इस वास्तविक्ता से भली-भाँति परिचित थे कि साम्प्रदायिक द्वेष, हिंसा व नृशंसता, पहले देश की जनसंख्या के दो महत्वपूर्ण तत्व (हिन्दू-मुस्लिम सम्प्रदायों) के मध्य अपना कार्य करेंगी। फिर यहीं विभिन्न जातियों धार्मिक-मतभेदों, वर्गों तथा बिरादरियों की पंक्तिबद्धता, और नकली भाषायी, तथा क्षेत्रीय

www.abulhasanalinadwi.org

भेद-भाव के रूप में सामने आयेगी। और जब यह कार्य समाप्त हो जायेगा तो वह आग के समान (जब उसे जलाने के लिये ईंधन न मिले तो वह अपने को खाने लगती है) देश के शान्तिप्रिय नागरिकों को अपना लुक्मा बना लेगी और यह देश नष्ट हो जायेगा।

निर्माणिक कार्य और जनसेवा का रहस्य यह है कि मनुष्य कभी भी मनुष्य से निराश नहीं हुआ

मानवता के वर्तमान एवं भविष्य, और सारी सभ्यता, आर्थिक, राजनीतिक यहाँ तक कि नैतिक एवं धार्मिक समस्याओं और समस्त दर्शनशास्त्रों व विचारधाराओं का दारोमदार पूर्णतः इस पर है कि मानव जीवित और सुरक्षित है। उसको अपनी ज़िन्दगी की तरफ़ से इतमीनान, मानव जीवन के प्रति सम्मान और उसकी सही क़ीमत का एहसास तथा उसकी पवित्रता पर अडिग विश्वास है। प्राचीन काल से लेकर अब तक जिस चीज़ ने मानवता की ज्योति को निरन्तर जलाये रक्खा, वह ईश्वर का यह वरदान है कि अच्छे इन्सान इन्सान से निराश नहीं हुए, उन्होंने इसको ऐसा रोगी नहीं समझा जिसका कोई इलाज न हो और इसे ऐसा दानव नहीं समझा जिसका सुधार असम्भव हो। वह कभी इसके अस्तित्व से ऐसे उचाट नहीं हुए कि इसकी सूरत भी गवारा न करें। उन्होंने मानव के जीवित रहने के अधिकार का कभी इन्कार नहीं किया। मानव संसार के लिए कोई चीज इससे अधिक खतरनाक और चिन्तायुक्त नहीं कि इन्सान इन्सान से निराश हो जाये। इससे भी अधिक चिन्ता की बात यह है कि वह इस घृणा व निराशा के पागलपन में बेज़बान औरतों और मासूम बच्चों पर हाथ उठाये और कलियों को खिलने व मुस्काने से पहले ही मसल कर रख दे।

देश की सबसे बड़ी शक्ति निर्भीक व सच्चे इन्सानों का वजूद

राष्ट्र की शक्ति का मूलस्रोत तथा जीने और फलने-फूलने के लिए उसका सबसे बड़ा सहारा ऐसे सत्यवादी और बेलाग व्यक्तियों का अस्तित्व है जो बड़े से बड़े नाजुक और संवेदनशील अवसर पर

www.abulhasanalinadwi.org

जुल्म को जुल्म, अन्याय को अन्याय और गलती को गलती कह सकते हैं। जिस देश में उसकी आवादी एवं आवश्यकता के अनुसार ऐसे व्यक्ति पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं उस देश के भविष्य के प्रति निराश होने की आवश्यकता नहीं। उसका भविष्य अवश्य ही उज्जवल होगा।

मानव जाति का अन्तिम सहारा दो वर्ग, धार्मिक मनुष्य तथा सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं, जिनमें सबसे अन्त में बिगाड़ आता है

जब किसी पीढ़ी पर, किसी युग में नैतिक पतन का ऐसा दौरा पड़ता है अथवा वह किसी इन्सानी साज़िश या किसी फूट डालने वाली ताकत का शिकार होती है उस समय दो वर्ग मैदान में आते हैं -एक बुद्धजीवियों का वर्ग और दूसरा धार्मिक लोगों का वर्ग। यह दो वर्ग हैं जिनमें बिगाड़ (भ्रष्टाचार) सबसे अन्त में दाखिल होता है। इतिहास हमें बताता है कि बिगाड़ सबसे अन्त में जिस वर्ग में दाखिल होता है वह मज़हबी तबक़ा है उसके बाद बुद्धजीवियों का वर्ग है। लेकिन जब इन दो वर्गों में भी बिगाड़ आ जाये तो फिर ऐसे समाज को कोई चीज बचा नहीं सकती।

इस समय हिन्दुस्तान में यह मोड़ आ गया है कि पढ़े लिखों का समुदाय, बुद्ध जीवी वर्ग हमारे विद्या केन्द्रों के विद्वान मैदान में आयें। इस समय मैदान बुद्धजीवियों का है, मज़हबी आदमियों और ऐसे बेलाग इन्सानों का है जो राजनीतिक पार्टियों और राजनीतिक लाभ से बिल्कुल आंखें बन्द कर लें। इस से कोई मतलब न रखें कि ऐसा करने से हमारी पार्टी पावर में आयेगी और हमारी सरकार बनेगी। ऐसे उदाहरण भी इतिहास में मिलते हैं कि जब इनाम मिलने का अवसर आया और हुकूमत थाली में रख कर पेश की जाने लगी तो अल्लाह के बन्दों (भक्तों) ने कहा कि हमने इसलिये काम नहीं किया था हमने तो हमदर्दी में किया था, निष्ठा के साथ किया था खुदा की खुशनूदी के लिए किया था, हमें इसका इनाम नहीं लेना है।

www.abulhasanalinadwi.org

भारतवर्ष के इतिहास में सबसे खतरनाक समय

मैं बिना किसी क्षमा याचना के साफ कहता हूँ कि मैंने इतिहास का अध्ययन किया है, मैं नही समझता कि हमारा हिन्दुस्तानी समाज कभी ऐसे खतरे से दो चार हुआ हो जैसा कि इस युग में हुआ है। हिन्दुस्तान का शरीर बार-बार कमजोर हुआ हिन्दुस्तान की पराजय हुई, उस पर ब्रिटेन की विदेशी हुकूमत रही। यह सब ऐतिहासिक घटनायें हैं। लेकिन हिन्दुस्तान की आत्मा इस तरह से कमजोर नहीं हुई थी कि उसने अपना काम छोड़ दिया हो। हिन्दुस्तान के इतिहास में कभी ऐसा दौर नहीं आया कि बुराई और जुल्म को इस आसानी के साथ सहन कर लिया गया हो जिस आसानी के साथ आज गवारा किया जा रहा है बल्कि इसको फलस्फा बनाया जा रहा है इसके द्वारा पार्टियों को मजबूत और संगठित किया जा रहा है। हिन्दुस्तान सैकड़ों मुसीबतों का शिकार हुआ लेकिन उसके इन्सानों का अन्तःकरण जिन्दा रहा, उसने अपना काम करना कभी नहीं छोड़ा। इस समय जो असल खतरा है वह यह कि हिन्दुस्तान का अन्तःकरण कहीं मर न गया हो: —

मुझे यह डर है दिले जिन्दा तू न मर जाये,
कि जिन्दगी ही इबारत है तेरे जीने से।

जीवित और जागृत हृदय के चमत्कार

इस से बढ़कर कोई खतरे की बात और क्या हो सकती है कि इतने बड़े मुल्क में किसी सहृदय व्यक्ति की कराह सुनने में नहीं आती कि तड़प कर किसी ने फरियाद की हो और सब कुछ तज कर मैदान में आ गया हो। लीडर अपनी जगह पर, राजनीतिक पार्टियाँ अपनी जगह पर संस्थायें अपनी जगह पर, पुस्तकालय अपनी जगह पर, वक्ता अपनी जगह पर, बुद्धजीवी अपनी जगह पर लेकिन वह अन्तःकरण कहाँ है जो समाज के इस पतन पर, इंसानियत की इस बस्ती पर खून के आँसू रोये? मानवता की रक्षा इसी अन्तःकरण ने की है तीर तलवार ने नहीं की सेना ने नहीं की है, शाही खजानों और दौलत की बहुतात ने नहीं की है, ज्ञान के विकास ने नहीं की है

www.abulhasanalinadwi.org

बल्कि मानव का तन्तःकरण है जो सब पर गालिब आया, सर्वोपरि रहा। जहाँ साधन नहीं थे उसने वहाँ साधन पैदा कर लिए। आप देखिये जब किसी के दिल पर चोट लगती है और जब कोई बेचैन होता है तो सब कुछ कर लेता है। एक आदमी के पास साधनों का ढ़ेर है लेकिन उसके दिल में दर्द नहीं है और कुछ करने का इरादा ही नहीं है तो समय निकल जाता है और वह कुछ नहीं कर पाता मुझे यह खतरा है कि हिन्दुस्तानी समाज का अंतःकरण सुन्न का शिकार हो गया है उसने अपना काम करना छोड़ दिया है। यह खतरे की बात है इसलिए कि मानवता की आस इसी अन्तःकरण से है। इस दुनिया में जो कुछ भलाई की उम्मीद है वह इसी अन्तः करण से है। जब यह अन्तःकरण जागृत होता है उसको खुदा की तरफ से रोशनी मिलती है। पैगम्बरों की तरफ से इसको भोजन मिलता है और यह दौलत परस्ती का शिकार नहीं होता, शक्ति पूजा का शिकार नहीं होता तो फिर यह अन्तःकरण वह काम करता है जो बड़ी-बड़ी सलतनतों और बड़ी बड़ी फौजों से नहीं हो सका देखिये कुछ जिन्दा जमीरों (जागृत अन्तःकरण) ने कुछ सहृदय आत्माओं ने अपने-अपने समय में क्या काम कर लिया। हमारे ऋषि मुनि क्या रखते थे, उनके पास कौन सी पूंजी थी, किन्तु उन्होंने एक नये समाज का निर्माण किया, उनके प्रयास से एक नया युग प्रारम्भ हो गया।

चरित्र की गिरावट अपने कगार पर

आज हमारे समाज को ऐसे नवजवानों की जरूरत है जो मैदान में आयें और देश को नैतिक पतन से बचायें। नैतिक पतन अपनी चरम तक पहुँच गया है। एक आदमी किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये तो उसके आस पास कुहराम मच जाये, लोग जमा हो जायें, मातायें अपने घरों से निकल आयें, बच्चों को छोड़ दें। कोई पानी लेकर आये, कोई दवा लेकर आये कि हमारे भाई मालूम नहीं कहाँ जा रहे थे दुर्घटना ग्रस्त हो गये। लेकिन इस देश के नैतिक पतन का यह हाल है कि उस वक्त लोग उन मरे हुए, कुचले हुए इंसानों के हाथ से घड़ियां निकाल लेते हैं। उस समय बजाय इसके कि उनके सूखे

www.abulhasanalinadwi.org

होठों में पानी की एक बूँद डालें, वह जालिम उनकी कीमती चीजें लूटने में लग जाते हैं। आप यह बातें इतिहास में पढ़ते तो विश्वास नहीं करते । रेलों में अनेक बार ऐसी दुर्घटनायें घटित होती हैं और निकट के देहात की आबादी देखती है कि एक आदमी दबा हुआ है, दो लकड़ियों के बीच में उसका बदन आ गया है। वह कहता है कि मेरा सब कुछ ले लेना किसी तरह मुझे इस शिकंजे से निकाल दो तो उन्होंने उसके हाथ से घड़ी छीन ली और उसकी जेब से रुपये निकाल लिए। और उसे मरता हुआ छोड़कर चले गये। जिस समाज का दिल ऐसा पत्थर हो जाये उस समाज को देखकर भला दिल खुश हो सकता है। क्या उससे आशा की जा सकती है कि वह समाज दुनिया में बाकी रहेगा और नेतृत्व का कोई बड़ा रोल अदा करेगा ?

मैंने कई बार इसका नक़शा खींचा है कि एक यात्री बड़े अरमानों के साथ बम्बई से आ रहा है, थोड़ी सी पूँजी जोड़कर। सुना है कि मां बीमार है। जाते ही दवा लाऊंगा। वह मुझे देखकर खुश होगी। उसके अंदर ताकत आजायेगी और वह आँखें खोल देगी। अभी वह स्टेशन से चला ही था कि उसे छुरा घोंप दिया गया। उधर माँ तड़प रही है और इधर बेटे ने जान दे दी। जिस समाज में यह घटनायें हों उस समाज में क्या कोई भी तरक्की और खुशी की बात हो सकती है। अपने देश में यूनीवर्सिटियों की जो संख्या बताई जाती है, मैं कहता हूं इसकी दस गुना यूनीवर्सिटियाँ हो जायें तब भी इस समाज के लिए कोई खुशी और इतमीनान की बात नहीं, कोई इज्ज़त की बात नहीं। औसत पढ़े लिखे लोग हों मगर ज़ुल्म से नफरत हो तो वह समाज जीवित है ताक़तवर है और सम्भव है कि दूसरी कौमों में (राष्ट्र) का नेतृत्व कर सके।

देश के एक बड़े विद्वान की चेतावनी और एक दुःखी हृदय की कराह

मैं इस अवसर पर भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० ज़ाकिर हुसैन खाँ के अध्यक्षीय भाषंण का एक अंश आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ। यह भाषण उन्होंने 17 नवम्बर 1946 को जामिया मिलिया इस्लामिया के सिल्वर जुबिली समारोह के अवसर पर दिया था। और

www.abulhasanalinadwi.org

उस समय भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू, काँग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सरदार पटेल, श्री राज गोपाल आचार्य, श्री मो० अली जिनाह तथा अंतरिम सरकार के मंत्रीगण और हिन्दुस्तान के चोटी के बुद्धजीवी, विद्वान, समाज सेवक समारोह में उपस्थिति थे। उस समय दिल्ली में सामप्रदायक झगड़े फूट पड़े थे एवँ छुरे बाज़ी की वारदातें हो रही थी। डा० ज़ाकिर हुसैन का यह कथन आज के युग में उसी तरह पूरा उतरता है।

"आप सभी लोग आसमाने सियासत के तारे हैं। लाखों नहीं करोड़ों आदमियों के दिलों में आपके लिए जगह है। आपकी यहाँ उपस्थिति से लाभ उठाकर मैं शिक्षा का कार्य करने वालों की ओर से बडे ही दुःख के साथ कुछ बातें कहना चाहता हूं। आज देश में आपसी नफरत की जो आग भड़क रही है उसमें हमारा इस बाग़ को सुधारने का यह कार्य पागलपन प्रतीत होता है यह आग सभ्यता तथा मानवता की भूमि को जलाए देती है। इसमें नेक तथा सज्जन पुरुषों के नये फूल कैसे खिलेंगे ? पशुओं से बदतर स्तर रखने वाले लोगों में हम मानवीय आचरण कैसे उत्पन्न करेंगे ? मानवता के सेवक कैसे पैदा कर सकेंगे ? पशुओं की दुनिया में मानवता को कैसे बाकी रख सकेंगे ? यह शब्द शायद कुछ कठोर प्रतीत होते हों परन्तु इन हालात के लिए जो दिन-प्रति-दिन हमारे चारों और फैल रहे हैं इस से कठोर शब्द भी नर्म ही होते। हम लोग जो अपने कार्यवश बच्चों का आदर करते हैं, आपको क्या बताएं कि जब हम यह सुनते हैं कि इस पागल पन से बच्चे तक सुरक्षित नहीं हैं तो हम पर क्या बीतती है। राष्ट्रीय कवि (टैगोर) ने कहा था कि हर बच्चा जो दुनियाँ में आता है, अअने साथ यह संदेश लाता है कि ईश्वर अभी इन्सान से पूरी तरह निराश नहीं हुआ है। परन्तु क्या हमारे देश का इनसान अपने आपसे इतना निराश हो चुका है कि इन कोमल कलियों को खिलने से पहले ही मसल देना चाहता है ? भगवान के लिए सर जोड़कर बैठिये और इस आग को बुझाइये। यह समय इस छान-बीन का नहीं हैं कि आग किसने लगाई, कैसे लगी। आग लगी हुई है उसे बुझाईये। यह समस्या इस जाति और उस जाति के जीवित रहने की नहीं है। सभ्य

www.abulhasanalinadwi.org

मानवीय समाज तथा वैहशियाना दरंदगी के बीच किसी एक को अपनाने का है। इश्वर के लिए इस देश में सभ्यता की जड़ों को इस प्रकार छिन्न-भिन्न न होने दीजिये।"

अपने समुदाय के बजाये दूसरों को प्रवचन

यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि सामान्यता जो लोग ऐसी विषम परिस्थितियों में कुछ करने के लिए खड़े भी होते हैं वह अपने वर्ग के सुधार के कठिन काम को छोड़कर दूसरे वर्ग की दीक्षा देने, उनके नैतिक सुधार का बीड़ा उठाने तथा किसी दूसरे वर्ग या तत्व पर घटनाओं की जिम्मेदारी थोपने के आसान काम को अपना लेते हैं। वर्तमान स्थिति इतनी असाधारण, इतनी चिन्ताजनक और इतनी भयावह है कि अब साधारण नैतिक अपीलों अथवा प्रशासनिक व्यवस्थाओं से काम नहीं चल सकता। इसके लिए तो देश की आत्मा और उसके अन्तःकरण को झँझोढ़ने, उसकी आत्मा को चीख़ कर पुकारने, मानवता की लाज, मानवता के प्रेमियों और खौफे खुदा के अन्तिम अस्त्र से काम लेने की जरूरत है जिससे निःसन्देह अभी तक यह प्राचीन धार्मिक देश और यहाँ का कोमल और प्रेमी हृदय खाली नहीं हुआ है।

राष्ट्र के निर्माण में घातक कमी

हमें आत्म-मनन करना चाहिए कि हमने इस देश के मानव के विकास के लिए उसकी आत्मा को जगाने के लिए, उसके अन्तःकरण को सजग करने के लिए और इन्सानों को इन्सान से प्रेम करने का सबक़ सिखाने के लिए, और इन्सानी जान, मानवता के प्रति सम्मान की भावना जागृत करने के लिए कहाँ तक और कितना प्रयास किया है। हमें यह स्वीकार मरना चाहिए कि हमने देश को आजाद कराने के लिए जितनी कोशिश की देश के अन्तः करण को आजाद कराने के लिए उतनी कोशिश नहीं की। हमने इसको ब्रिटेन के अत्याचार से छुटकारा दिलाया किन्तु अत्याचार के हर रूप से इसे छुटकारा दिलाने की कोई कोशिश नहीं की।

www.abulhasanalinadwi.org

ऐसी परिस्थिति में दो वर्ग के लोगों से आशा की जाती है कि वह आगे आकर सिसकती मानवता की आशाओं को साकार करेंगे। एक निःस्वार्थ बुद्धजीवियों का वर्ग और दूसरा 'निष्ठ' धार्मिक लोगों का वर्ग। यह दो वर्ग सामान्यतया सबसे अन्त में गिरावट का शिकार होते हैं और जब इनमें भी खराबी आ जाती है तो फिर इस सभ्यता को बचाने वाली दुनिया में कोई ताक़त नहीं रह जाती।

मैं इस अवसर पर बिना किसी क्षमा याचना के कुर्आन मजीद की एक आयत का अनुवाद सुनाऊँगा जिसमें भूतकाल के दर्पण में वर्तमानकाल का सजीव चित्रण किया गया है और उसके सुधार के लिए ऐसे ही लोगों से आशा प्रकट की गई है जिनके मस्तिष्क में कुछ बची-खुची रोशनी और मन में मानवता के प्रति कुछ भी दर्द बाकी है।

> अनुवाद : तुम से पहले के इन्सानी नसलों और गिरोहों में कुछ ऐसे विवेकशील लोग क्यों न हुए जो देश में फसाद और बिगाड़ का रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं। उनमें थोड़े ही लोग ऐसे हुए जो इन विशेषताओं को रखते थे। और हमने उनको (इस आम तबाही से) बचा लिया। बाक़ी जिन्होंने इसी ज्यादती और जुल्म का रास्ता अख्तियार किया वह उन्हीं आसानियों और लुत्फ़ व ऐश के रास्ते पर पड़ गये जिनके साधन और अवसर उन्हें मुहय्या किये गये थे, और वह मुजरिम थे। (सूरए हूद आयत 116)

चार सूत्री कार्यक्रम की आवश्यकता

वस्तुस्थिति में सुधार के लिए एक सर्वव्यापी दीर्घकालीन प्रोग्राम की जरूरत है जिस पर देश के बुद्धजीवियों,सुधार एवं शिक्षा का काम करने वालों और राजनीतिक नेताओं को शीघ्र ध्यान देना चाहिए। इस सम्बन्ध में मैं आप का ध्यान उन चार सूत्रों की ओर आकर्षित करना चाहुंगा जो मेरे नज़दीक तुरन्त प्रभावी और लाभप्रद हो सकते हैं :—

1. विशुद्ध धार्मिक, नैतिक, मानवीय बुनियाद पर जन सधारण से सीधा सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास और दौरों, शिष्ट मण्डलों, मुलाक़ातों, मुहल्लों, बस्तियों, गावों और कसबों के स्तर पर जलसों और सम्बोधनों का आयोजन जिनमें इन्सान की जान, उसकी इज़्ज़त

www.abulhasanalinadwi.org

व आबरु, धन-जन की क़दर व क़ीमत मन-मस्तिष्क में बिठाने की कोशिश की जाये और उनके प्रति सम्मान ओर उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी की भावना जागृत की जाये। धार्मिक, नैतिक और मानवीय आधार पर यह काम इसलिए प्रभावी और लाभप्रद है कि इस देश के बासियों की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से धार्मिक, शान्तिप्रिय, प्रियदर्शी और मानस-प्रिय है। वह इसी भाषा को अधिक समझते हैं और इसी रास्ते से उनके मन-मस्तिष्क तक पहुंचना आसान है, ओर इसी का प्रभाव चिर-स्थाई होता है, दूसरे इस लिए कि (अफ़सोस व शर्म के साथ यह बात कही जाती है) बार-बार अनुभवों के बाद जनसाधरण का राजनीतिक दलों और चुनाव के समय जारी उनके घोषणा पत्रों एवं वादों पर से भरोसा और आस्था उठती जा रही है। और वह इससे प्रभावित नहीं होते।

2. प्राइमरी स्तर से लेकर कालेजों और यूनिवर्सिटियों के शैक्षणिक स्तर तक पाठ्यक्रम विशेषकर इतिहास के पाठों और उसके पाठ्यक्रम में सुधार जो देश के दो बड़े वर्गों (मुसलमानों और गैर मुस्लिमों) के मन-मस्तिष्क में द्वेश की भावना जागृत करने का उत्तर-दायी है। चूँकि शिक्षा-दक्षा का यह क्रम बचपन के प्रारम्भिक काल से शुरू हो जाता है और किताब में पढ़ी हुई बातों का यकीन (विशेषकर जब उनको घटनाओं से एवं किस्से-कहानियों से सुदृढ़ किया जाये और शिक्षक भी उसके सक्रिय प्रचारक एवं समर्थक हों) छात्रों के मन में घर कर जाता है और वह हर लिखी छपी हुई बात को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं तो उनका मन-मस्तिष्क उसी में ढल जाता है और उनकी पूरी जिन्दगी उसी के साये में गुज़रती है। यही ज़हर है जो आज हमारे पूरे समाज में फैला हुआ है। और किसी समय वह हान्डी का उबाल और भावनाओं की धारा में बहकर साम्प्रदायिक दंगों का रूप धारण कर लेता है। जब तक इस पाठ्यक्रम (जिसकी दाग़बेल अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यीय उद्देश्यों की पूर्ति और "फूट डालो हुकूमत करो" के सिद्धान्त पर डाली थी) का सुधार नहीं होगा, इस देश में शन्ति और सुरक्षा, पारस्परिक विश्वास और दोनों वर्गों के बीच अच्छे सम्बन्धों की आशा नहीं की जा सकती।

www.abulhasanalinadwi.org

3. हिन्दुस्तानी प्रेसों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा करने का प्रभावी, ताकतवर और सुव्यवस्थित प्रयास करना। यह समाचार पत्र अपने कटुतापूर्ण समाचारों, सनसनी खेज खबरों और सामान्यतः तस्वीर का एक रुख पेश करने और एक वर्ग के जुल्म और दूसरे वर्ग की मजलूमियत (उत्पीड़न) ही को दिखाकर लाखों इन्सानों के दिलों में नफ़रत व अदावत की आग भड़का देते हैं और किसी वर्ग अथवा आबादी के एक तत्व की ओर से आशंका और दुर्भावना का एक बादल छा देते हैं। मैंने कुछ समय पहले इसी शहर लखनऊ में कुछ पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों की एक अच्छी खासी संख्या के सामने जो एडीटर्स कान्फ्रेन्स में भाग लेने आये थे फ़ारसी के एक मशहूर शेर का एक मिसरा पढ़ा था :—

"ज़ेर क़दमत हज़ार जाने अस्त"

शायर अपने महबूब को सम्बोधित करके कहता है "तेरे क़दम के नीचे हज़ारों जाने हैं। इस लिए बड़ी एहतियात की ज़रुरत है। मैंने इस मिसरे में केवल एक अक्षर को बदलकर इसे इस तरह पढ़ा था "ज़ेर क़लमत हज़ार जाने अस्त" अर्थात् तेरे क़लम के नीचे हज़ारों इन्सानी जानें हैं।

4. ब्रिटिश शासन ने अपनी कमज़ोरी का अनुभव करके कि उसके प्रतिनिधि हिन्दुस्तान में बहुत थोड़ी संख्या में हैं और वह सात समन्दर पार से इस देश और देशवासियों की इच्छा के विरुद्ध इस पर अपना क़ब्ज़ा और प्रशासन बनाए हुए हैं, हिन्दुस्तान में अपने और पब्लिक के बीच एक 'एजेन्सी' की ज़रूरत समझी थी जो उसका पब्लिक पर रोब व दाब क़ायम रखे और जिससे यहां की जनता भयभीत रहे और जिसके सहारे वह यहाँ अपने (अत्याचार पूर्ण) क़ानून लागू कर हालात को कन्ट्रोल कर सके। यह पुलिस का गठन था और चुंकि विदेशी हुकूमत ने इसकी बुनियाद इसी दृष्टिकोण से डाली थी इसलिए उसने इसकी ट्रेनिंग दहशत बनाए रखने पर की थी। उन्हें सिखाया जाता था कि वह लोगों को किस प्रकार भयभीत करें। इसको जानबूझ कर हर प्रकार की नैतिक शिक्षा, देश वासियों के प्रति सम्मान, उच्च मानवीय भावनाओं से अलग रखा गया था। इसका नतीजा उस कैरेक्टर के रूप में ज़ाहिर हुआ जो इस संगठन का न

www.abulhasanalinadwi.org

केवल विशिष्ट चिन्ह बल्कि प्रशंसनीय और गौरवपूर्ण स्तर बन गया।

लेकिन अब जब कि हिन्दुस्तान आज़ाद है और हमारे चुने हुए भाइयों का काम इस देश पर हुकूमत करना नहीं बल्कि इसके इन्तेज़ाम को संभालना और जनता की सेवा करना है, पुलिस का स्तर और उसके बारे में दृष्टिकोण बदलना चाहिए और इस महान व लाभप्रद संगठन की ट्रेनिंग, जो देश की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण अंश और सम्मानीय तत्व है, बिल्कुल दूसरे ढंग पर होनी चाहिए। इसमें नैतिक शिक्षा, भारतीय नागरिकता, मानवीय भावनाओं, दूसरों की सहायता करने की भावना, कमज़ोरों पर दया। छोटों से प्रेम, बड़ों के प्रति श्रद्धा और अपने कर्तव्यों का भली प्रकार निर्वाह करने की क्षमता पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि वह इस प्रकार से देशवासियों की नज़र में सहृदय, दयावान और मददगार नज़र आयें। दूसरे देशों में यहाँ तक कि स्वयं ब्रिटेन में उनको इसी नज़र से देखा जाता है।

मित्रो! मैं ने, 'मानवता का संदेश' फोरम के समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने आप को इस अवसर पर यहाँ आने और एक जगह पर बैठकर देश की वर्तमान परिस्थितियों का जो भयावह चित्र प्रस्तुत किया है उसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। और इस पर जिस चिंता और खतरे की ओर संकेत किया है उस में भी कल्पना की उड़ान अथवा बद-शगूनी से काम नहीं लिया है। मैं अपनी साफगोई स्पष्टवादिता के लिए क्षमा याचना करते हुए ग़ालिब का यह शेर पढ़ने के बजाय कि,

'रखियो ग़ालिब मुझे इस तल्खनवाई में मआफ़
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा होता है'

इस पर दुखी हूँ कि मैं इससे बढ़कर और इससे अधिक स्पस्ट शब्दों में अपने हृदय की भावनाएं व्यक्त करने का साहस न कर सका। और मेरी वाणी व लेखनी ने मेरे अन्तःकरण का साथ नहीं दिया। और मैं इसी शहर लखनऊ के प्राचीन कवि, अमीर मीनाई का शेर पढ़कर आपसे विदा लेता हूं :—

'अमीर' जमा हैं अहबाब, दर्द दिल कह ले
फिर इल्तिफ़ात दिले दोस्तां रहे न रहे।'

www.abulhasanalinadwi.org